



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
आजीट समाचार	२४-५-२५	५	६-८

गर्भियों में दुधारू पशुओं के लिए लाभकारी है लोबिया का चारा : कुलपति प्रो. काम्बोज

लोबिया को ज्वार, बाजरा व मक्की के साथ उगाने से बढ़ जाती है चारे की गुणवत्ता

हिसार, 23 मई (विरेन्द्र वर्मा): गर्भी के मौसम में दुधारू होते हैं। यह किस्म विभिन्न गेंगों विशेषकर पीले मौजेक विषाणु पशुओं के लिए लोबिया चारे की फसल लाभकारी है। लोबिया की खेती प्रायः सिंचित क्षेत्रों के लिए उपयुक्त है। यह गर्भी और खरीफ मौसम की जल्द बढ़ने वाली फलीदार, पौष्टिक एवं स्वादिष्ट चारे वाली फसल है। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने किसानों को लोबिया फसल की बिजाई संबंधी जानकारी देते हुए कहा कि हरे चारे के अलावा दलहन, हरी फली (सब्जी), व हरी खट्ट के रूप में अकेले अथवा मिश्रित फसल के तौर पर भी लोबिया को उगाया जाता है। हरे चारे की अधिक पैदावार के लिए इसे सिंचित इलाकों में मई में तथा वर्षा पर निर्भर इलाकों में बरसात शुरू होते ही बीज देना चाहिए। उन्होंने बताया कि मई में बोई गई फसल से जुलाई में इसका हरा चारा चारे की कमी वाले समय में उपलब्ध हो जाता है। अगर किसान लोबिया को ज्वार, बाजरा या मक्की के साथ 2:1 के अनुपात में लाइनों में उगाएं तो इन फसलों के चारे की गुणवत्ता भी बढ़ जाती है।



लोबिया की फसल।

गर्भियों में दुधारू पशुओं की दूध देने की क्षमता बढ़ाने के लिए लोबिया का चारा अवश्य खिलाना चाहिए। इसके चारे में औसतन 15-20 प्रतिशत प्रोटीन और सूखे दारों में लगभग 20-25 प्रतिशत प्रोटीन होती है। अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. पाहुजा ने बताया कि किसान लोबिया की ऊत किस्में लगाकर चारा उत्पादन बढ़ा सकते हैं। लोबिया की सी.एस. 88 किस्म, एक उत्कृष्ट किस्म है जो चारे की खेती के लिए सर्वोत्तम है। यह सीधी बढ़ने वाली किस्म है जिसके पते गहरे हरे रंग के तथा चौड़े

रोग के लिए प्रतिरोधी व कीटों से मुक्त है। इस किस्म की बिजाई सिंचित एवं कम सिंचाई वाले क्षेत्रों में गर्भी तथा खरीफ के मौसम में की जा सकती है। इसका हरा चारा लगभग 55-60 दिनों में कटाई लायक हो जाता है। इसके हरे चारे की पैदावार लगभग 140-150 किंवद्वय प्रति एकड़ है। चारा अनुभाग के वैज्ञानिक डॉ. सतपाल ने बताया कि लोबिया की काश्त के लिए अच्छे जल निकास वाली दोमट मिली सबसे उपयुक्त होती है, परन्तु रेतीली मिली में भी इसे आसानी से उगाया जा सकता है। लोबिया की अच्छी पैदावार लेने के लिए किसानों को खेत की बढ़िया तैयारी करनी चाहिए। इसके लिए 2-3 जुताई काफी हैं। पौधों की उचित संख्या व बढ़वार के लिए 16-20 किलोग्राम बीज प्रति एकड़ उचित रहता है। पैक्ट-से-पैक्ट की दूरी 30 सेंटीमीटर रखकर पोरे अथवा डिल द्वारा बिजाई करें। लेकिन जब मिश्रित फसल बोई जाए तो लोबिया के बीज की एक तिहाई मात्रा ही प्रयोग करें। उन्होंने किसानों को सलाह दी कि बिजाई के समय भूमि में पर्याप्त नमी होनी चाहिए। लोबिया के लिए सिफारिश किए गए राइजोबियम कल्चर से बीज का उपचार करके बिजाई करें। फसल की अच्छी बढ़वार के लिए 10 किलोग्राम नाइट्रोजन व 25 किलोग्राम फास्फोरस प्रति एकड़ बिजाई के पहले कतारों में ड्रिल करनी चाहिए। दलहनी फसल होने के कारण इसे नाइट्रोजन उर्वरक की अधिक आवश्यकता नहीं होती। मई में बोई गई फसल को हर 15 दिन बाद सिंचाई की आवश्यकता पड़ती है।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैरभूम	२५-५-२५	१	३-८

लोबिया को ज्वार, बाजरा तथा मक्की के साथ उगाने से बढ़ जाती है चारे की गुणवत्ता गर्मियों में दुधारु पशुओं के लिए लाभकारी हो सकता है लोबिया का चारा

दैरभूमि न्यूज अडिसाइन



हिसार। लोबिया की फसल का फाइल फोटो।

फोटो: हरिभूमि

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने कहा है कि गर्मी के मौसम में दुधारु पशुओं के लिए लोबिया चारे की फसल लाभकारी है। लोबिया की खेती प्रायः स्थिरत श्रेणी के लिए उपयुक्त है। यह गर्मी और खरीफ मौसम की जल्द बढ़ने वाली फलीदार, पौधिक एवं स्वादिष्ट चारे वाली फसल है। किसानों को लोबिया फसल की बिजाई संबंधी जानकारी देते हुए कुलपति काम्बोज ने गुरुवार को कहा कि हरे चारे के अलावा दलहन, हरी फली (सब्जी) व हरी खाद के रूप में अकेले अथवा मिश्रित फसल के तौर पर भी लोबिया को उगाया जाता है। हरे चारे की अधिक पैदावार के लिए इसे

सिंचित इलाकों में मई में तथा वर्षा पर निर्पर इलाकों में बरसात शुरू होते ही बीज देना चाहिए। उन्होंने बताया कि मई में बोई गई फसल से

उज्जत किसानों का चरन करके अधिक पैदावार प्राप्त करें किसान

अब्दुल्लाहन विदेशक डॉ. दसके पाहुजा ने कहाया कि उज्जत किसी लगाकर चारा उत्पादन बढ़ा सकते हैं। लोबिया की जी.एस. 88 विस्त्र प्रकृति किसा है जो चारे की खेती के लिए ज्ञात है। यह सीधी बढ़ने वाली किसा है जिसके पास बहुते ही चारे के तथा छोड़े जाते हैं। यह किसा विभिन्न रोगों विशेषकर पौधे में जारी विषाणु रोगों के लिए प्रतिरोधी व कीटों से गुरुत है। इस किसा को बिजाई सिवित रखने का वाले खेतों में गर्मी तथा खरीफ के नीराम जैसा जो जा सकती है। इसका हरा चारा लगभग 55-60 दिनों में कठोर लाभक हो जाता है। इसके हरे चारे की पैदावार लगभग 140-150 विवर्तन प्रति एकड़ है।

अच्छे जल निकास वाली दोमंत मिट्टी सबसे उपयुक्त

चारा अनुसार के वैज्ञानिक ढंग सत्रापत वे बताया कि लोबिया की काशत के लिए अच्छे जल निकास वाली दोमंत मिट्टी सबसे उपयुक्त होती है, परन्तु रेतीली मिट्टी में भी हरे आसानी से उगाया जा सकता है। लोबिया की अच्छी पैदावार लेने के लिए किसानों की खेत की बहिया तैयारी करनी चाहिए। इसके लिए 2-3 जुताई लागती है। पौधों की उचित संख्या व बढ़ाकर के लिए 16-20 किलोग्राम बीज प्रति एकड़ उचित रहता है। पौधों के पौधित की दूरी 30-35टीमीटर रखकर पौधे अवधार छिल छारा बिजाएं करें। लोकिन जब बिजाएं फसल बोई जाए तो लोबिया के बीज की एक तिक्का नामा ही प्रयोग करें। उन्होंने किसानों को सलाह दी कि बिजाई के उम्मीद गुणी में पर्याप्त जीवी होनी चाहिए। लोबिया के लिए विकारिश विषय तथे राष्ट्रजीविज्ञ प्रतिचरण करके बिजाई करें।

जुलाई में इसका हरा चारा चारे की की दूध देने की क्षमता बढ़ाने के औसतन 15-20 प्रतिशत प्रोटीन कमी वाले समय में उपलब्ध हो लिए लोबिया का चारा अवश्य और सूखे दानों में लाभग 20-25 जाता है। गर्मियों में दुधारु पशुओं खिलाना चाहिए। इसके चारे में प्रतिशत प्रोटीन होती है।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
नीति जागरूक	२५-५-२५		

दुधारू पशुओं के लिए लाभकारी है लोबिया का चारा : काम्बोज

जागरण संवाददाता • हिसार : गर्मी के मौसम में दुधारू पशुओं के लिए लोबिया चारे की फसल लाभकारी है। लोबिया की खेती प्रायः सिंचित क्षेत्रों के लिए उपयुक्त है। यह गर्मी और खरीफ मौसम की जलद बढ़ने वाली फलीदार, पौष्टिक एवं स्वादिष्ट चारे वाली फसल है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने कहा कि हरे चारे के अलावा दलाहन, हरी फली (सब्जी) व हरी खाद के रूप में अकेले अथवा मिश्रित फसल के तौर पर भी लोबिया को उगाया जाता है। हरे चारे की आधिक पैदावार के लिए इसे सिंचित इलाकों में मई में तथा वर्षा पर निर्भर इलाकों में बरसात शुरू होते ही बीज देना चाहिए। उन्होंने बताया कि मई में बोई गई फसल से जुलाई में इसका हरा चारा

लोबिया को ज्वार, बाजरा तथा मरकी के साथ उगाने से बढ़ जाती है चारे की गुणवत्ता, दुधारू पशुओं के दूध देने के क्षमता भी बढ़ती है

चारे की कपी वाले समय में उपलब्ध हो जाता है। गर्मियों में दुधारू पशुओं की दूध देने की क्षमता बढ़ाने के लिए लोबिया का चारा अवश्य खिलाना चाहिए।

अनुसंधान निदेशक डा. एसके पाहुजा ने बताया कि किसान लोबिया की उन्नत किसी लगाकर चारा उत्पादन बढ़ा सकते हैं। चारा अनुभाग के वैज्ञानिक डा. सतपाल ने बताया कि लोबिया की काशत के लिए अच्छे जल निकास वाली दोमट मिट्टी सबसे उपयुक्त होती है, परंतु रेतीली मिट्टी में भी इसे आसानी से उगाया जा सकता है।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पंजाब के सरी	२५-५-२४	२	२-३

गर्भियों ने दुधारू पशुओं के लिए लाभकारी है लोबिया का चारा : कुलपति प्रो. काम्बोज



लोबिया की फसल

हिसार, 23 मई (ब्यूरो) : गर्भी के मौसम में दुधारू पशुओं के लिए लोबिया चारे की फसल लाभकारी है। लोबिया की खेती प्रायः सिंचित क्षेत्रों के लिए उपयुक्त है। यह गर्भी और खरीफ मौसम की जल्द बढ़ने वाली फलीदार, पौधिक

एवं स्वादिष्ट चारे वाली फसल है। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने किसानों को लोबिया फसल की विजाइ संबंधी जानकारी देते हुए कहा कि हरे चारे के अलावा दलहन, हरी फली (सब्जी) व हरी खाद के रूप में अकेले अथवा मिश्रित फसल के तौर पर भी लोबिया को उगाया जाता है। हरे चारे की अधिक पैदावार, के लिए इसे सिंचित इलाकों में मई में तथा वर्षा पर निर्भर इलाकों में बरसात शुरू होते ही बीज देना चाहिए।

उन्होंने बताया कि मई में बोई गई फसल से जुलाई में इसका हरा चारा चारे की कमी वाले समय में उपलब्ध हो जाता है। अगर किसान लोबिया को ज्वार, बाजरा या मवकी के साथ 2:1 के अनुपात में लाइंगों में उगाए तो इन फसलों के चारे की गुणवत्ता भी बढ़ जाती है। गर्भियों में दुधारू पशुओं की दूध देने की क्षमता बढ़ाने के लिए लोबिया का चारा अवश्य खिलाना चाहिए। इसके चारे में औसतन 15-20 प्रतिशत प्रोटीन और सुखे दानों में लगभग 20-25 प्रतिशत प्रोटीन होती है।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अभृत उआता	२४-५-२४	५	६

दुधारु पशुओं के लिए लाभकारी है लोबिया का चारा

“गर्मी के मौसम में दुधारु पशुओं के लिए लोबिया चारे की फसल लाभकारी है। लोबिया की खेती प्रायः सिंचित खेतों के लिए उपयुक्त है। यह गर्मी और खरीफ मौसम की जल्द बढ़ने वाली फलीदार, पौधिक एवं स्वादिष्ट चारे वाली फसल है। हरे चारे की अधिक पैदावार के लिए इसे सिंचित इलाकों में मई में व वर्षा पर निर्भर इलाकों में बारिश शुरू होते ही बीज देना चाहिए। मई में बोई गई फसल से जुलाई में हरा चारा चारे की कमी वाले समय में उपलब्ध हो जाता है। अगर किसान लोबिया को ज्वार, बाजरा या मूककी के साथ 2:1 के अनुपात में लाइनों में उगाएं तो इन फसलों के चारे की गुणवत्ता भी बढ़ जाती है। इसके चारे में औसतन 15-20 प्रतिशत प्रोटीन और सुखे दानों में लगभग 20-25 प्रतिशत प्रोटीन होती है।

-प्रो. बीआर कांबोज, कुलपति, एचएम



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पांच बजे न्यूज	23.05.2024	--	--

गर्मियों में दुधारू पशुओं के लिए लाभकारी है लोबिया का चारा : प्रो.काम्बोज



पांच बजे न्यूज

हिसार। गर्मी के मौसम में दुधारू पशुओं के लिए लोबिया चारे की फसल लाभकारी है। लोबिया की खेती प्रायः सिंचित शेत्रों के लिए उपयुक्त है। यह गर्मी और खरीफ मौसम की जल्द बढ़ने वाली फलीदार, पौधिक एवं स्वादिष्ट चारे वाली फसल है। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी. आर. काम्बोज ने किसानों को लोबिया फसल की बिजाई संबंधी जानकारी देते हुए कहा कि हरे चारे के अलावा दलहन, हरी फलों (सब्जी) व हरी खाद के रूप में अकेले अथवा मिश्रित फसल के तौर पर भी लोबिया को उत्पाद्यता देता है। हरे चारे की अधिक पैदावार के लिए इसे सिंचित इलाकों में मई में तथा वर्षा पर निर्भर इलाकों में बरसात शुरू होते ही बीज देना चाहिए। उन्होंने बताया कि मई में

बोई गई फसल से जुलाई में इसका हरा चारा चारे की कमी वाले समय में उपलब्ध हो जाता है। अगर किसान लोबिया को ज्वार, बाजरा या मझी के साथ 2:1 के अनुपात में लाइनों में उगाए तो इन फसलों के चारे को गुणवता भी बढ़ जाती है। गर्मियों में दुधारू पशुओं की दूध देने की क्षमता बढ़ाने के लिए लोबिया का चारा अवश्य खिलाना चाहिए। इसके चारे में औसतन 15-20 प्रतिशत प्रोटीन और सुखे दानों में लगभग 20-25 प्रतिशत प्रोटीन होती है।

उच्चत किस्मों का चयन करके अधिक पैदावार प्राप्त करें किसान

अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. पाहुजा ने बताया कि किसान लोबिया की उच्चत किस्में लगाकर चारा उत्पादन बढ़ा सकते हैं। लोबिया की सी.एस. 88 किस्म, एक उत्कृष्ट किस्म है

जो चारे की खेती के लिए सर्वोत्तम है। यह सीधी बढ़ने वाली किस्म है जिसके पते गहरे हरे रंग के तथा चौड़े होते हैं। यह किस्म विभिन्न रोगों विशेषकर पीले मौजेक विषाणु रोग के लिए प्रतिरोधी व कीटों से मुक्त है। इस किस्म की बिजाई सिंचित एवं कम सिंचाई वाले क्षेत्रों में गर्मी तथा खरीफ के मौसम में की जा सकती है। इसका हरा चारा लगभग 55-60 दिनों में कटाइ लायक हो जाता है। इसके हरे चारे की पैदावार लगभग 140-150 किंवद्दल प्रति एकड़ है।

चारा अनुभाग के वैज्ञानिक डॉ. सतपाल ने बताया कि लोबिया की काशत के लिए अच्छे जल निकास वाली दोमट मिट्टी सबसे उपयुक्त होती है, परन्तु रेतीली मिट्टी में भी इसे आसानी से उगाया जा सकता है। लोबिया की अच्छी पैदावार लेने के लिए किसानों को खेत की बढ़िया तैयारी करनी चाहिए। इसके लिए 2-3 जुताई काफ़ी हैं। पौधों की उचित संख्या बढ़ावार के लिए 16-20 किलोग्राम बीज प्रति एकड़ उचित रहता है। पूर्वत-से-पूर्वत की दूरी 30 सेटीमीटर रखकर पोरे अथवा डिल द्वारा बिजाई करें। लैकिन जब मिश्रित फसल बोई जाए तो लोबिया के बीज की एक तिक्काई मात्रा ही प्रयोग करें। उन्होंने किसानों को सलाह दी कि बिजाई के समय भूमि में पर्याप्त नमी होनी चाहिए। लोबिया के लिए सिफारिश किए गए राइजोबियम कल्चर से बीज का उपचार करके बिजाई करें। फसल की अच्छी बढ़ावार के लिए 10 किलोग्राम नाइट्रोजन व 25 किलोग्राम फास्फोरस प्रति एकड़ बिजाई के पहले कतारों में डिल करनी चाहिए। दलहनी फसल होने के कारण इसे नाइट्रोजन उत्तरक की अधिक आवश्यकता नहीं होती। मई में बोई गई फसल को हर 15 दिन बाद सिंचाई की आवश्यकता पड़ती है।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सिटी पल्स न्यूज़	23.05.2024	--	--

गर्मियों में दुधारू पशुओं के लिए लाभकारी है लोबिया का चारा : कुलपति प्रो. कांबोज

सिटी पल्स न्यूज़, हिसार। गर्मी के मौसम में दुधारू पशुओं के लिए लोबिया चारे की फसल लाभकारी है। लोबिया की खेती प्रायः सिंचित क्षेत्रों के लिए उपयुक्त है। यह गर्मी और खरीफ मौसम की जल्द बढ़ने वाली फलीदार, पौष्टिक एवं स्वादिष्ट चारे वाली फसल है। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. कांबोज ने किसानों को लोबिया फसल की बिजाई संबंधी जानकारी देते हुए कहा कि हरे चारे के अलावा दलहन, हरी फली (सब्जी) व हरी खाद के रूप में अकेले अथवा मिश्रित फसल के



तौर पर भी लोबिया को उगाया जाता है। हरे चारे की अधिक पैदावार के लिए इसे सिंचित इलाकों में मई में तथा वर्षा पर निर्भर इलाकों में बरसात

शुरू होते ही बीज देना चाहिए। उन्होंने बताया कि मई में बोई गई फसल से जुलाई में इसका हरा चारा चारे की कमी वाले समय में उपलब्ध हो जाता है। अगर किसान लोबिया को ज्वार, बाजरा या मक्की के साथ 2:1 के अनुपात में लाइनों में उगाएं तो इन फसलों के चारे की गुणवत्ता भी बढ़ जाती है। गर्मियों में दुधारू पशुओं की दूध देने की क्षमता बढ़ाने के लिए लोबिया का चारा अवश्य खिलाना चाहिए। इसके चारे में औसतन 15-20 प्रतिशत प्रोटीन और सूखे दानों में लगभग 20-25 प्रतिशत प्रोटीन होती है।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हेलो हिसार	24.05.2024	--	--



गर्मियों में दुधारू पशुओं के लिए लाभकारी है लोबिया का चारा : कुलपति प्रो. चौ.आर. काम्बोज

हिसार : गर्मी के मौसम में दुधारू पशुओं के लिए लोबिया चारे की फसल लाभकारी है। लोबिया की खेती प्रायः सिंचित क्षेत्रों के लिए उपयुक्त है। यह गर्मी और स्थरीक मौसम को जल्द बढ़ने वाली फलीदार, अधिक एवं स्वादिष्ट चारे वाली फसल है। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. चौ.आर. काम्बोज ने किसानों को लोबिया फसल की विजाई संबंधी जानकारी देते हुए कहा कि हरे चारे के आनंदा दलहन, हरी फली (सब्जी) व हरी खाद के रूप में अकेसे अथवा भिन्नत फसल के तौर पर भी लोबिया को उगाया जाता है। हरे चारे की अधिक पैदावार के लिए इसे सिंचित इलाकों में मई में तथा चरा पर निर्भर इलाकों में अक्षसत शुरू होते ही बोज देना चाहिए। उन्होंने बताया कि मई में बौहं गई फसल से जुलाई में इसका हरा चारा चारे की कमी वाले समय में उपलब्ध हो जाता है। अगर किसान लोबिया को ज्वार, बाजरा या मझी के साथ 2:1 के अनुपात में लाइनों में उगाएं तो इन फसलों के चारे की गुणवत्ता भी बढ़ जाती है। गर्मियों में दुधारू पशुओं की दूध देने की क्षमता बढ़ाने के लिए लोबिया का चारा अवश्य खिलाना चाहिए। इसके चारे में औसतन 15-20 प्रतिशत प्रोटीन और सूखे दानों में लगभग 20-25 प्रतिशत प्रोटीन होती है।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
चिराग टाइम्स न्यूज	23.05.2024	--	--

गर्भियों में दुधारू पशुओं के लिए लाभकारी है लोबिया का चारा : कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज

लोबिया को ज्वार, बाजरा तथा मक्की के साथ उगाने से बढ़ जाती है चारे की गुणवत्ता

चिराग टाइम्स न्यूज

हिसार = गर्भी के मौसम में दुधारू पशुओं के लिए लोबिया चारे की फसल लाभकारी है। लोबिया की खेती प्रायः सिंचित क्षेत्रों के लिए उपयुक्त है। यह गर्भी और खरीफ मौसम की जल्द बढ़ने वाली फलीदार, पीष्टिक एवं स्वादिष्ट चारे वाली फसल है। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने किसानों को लोबिया फसल की विजाई संबंधी जानकारी देते हुए कहा कि हरे चारे के अलावा दलहन, हरी फली (सब्जी) व हरी खाद के रूप में अकेले अथवा मिश्रित फसल के तौर पर भी लोबिया को उगाया जाता है। हरे चारे की अधिक पैदावार के लिए इसे सिंचित इलाकों में मई में तथा वर्षा पर निर्भर इलाकों में बरसात शुरू होते ही बीज देना चाहिए। उन्होंने बताया कि मई में बोई गई फसल से जुलाई में इसका हरा चारा चारे की कमी वाले समय में

उपलब्ध हो जाता है। अगर किसान लोबिया को ज्वार, बाजरा या मक्की के साथ 2:1 के अनुपात में लाइनों में डागाएं तो इन फसलों के चारे की गुणवत्ता भी बहु जाती है। गर्भियों में दुधारू पशुओं की दूध देने की क्षमता बढ़ाने के लिए लोबिया का चारा अवश्य खिलाना चाहिए। इसके चारे में औसतन 15-20 प्रतिशत प्रोटीन और सूखे दानों में लगभग 20-25 प्रतिशत प्रोटीन होती है।

उन्नत किस्मों का चयन करके अधिक पैदावार प्राप्त करें किसान अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. पाहुजा ने बताया कि किसान लोबिया की उन्नत किस्में लगाकर चारा उत्पादन बढ़ा सकते हैं। लोबिया की सी.एस. 88 किस्म, एक उत्कृष्ट किस्म है जो चारे की खेती के लिए सर्वोत्तम है। यह सीधी बहने वाली किस्म है जिसके पते गहरे हरे रंग के तथा चौड़े होते हैं। यह किस्म विभिन्न रोगों विशेषकर पीले मौजेक विषाणु रोग

के लिए प्रतिरोधी व कीटों से मुक्त है। इस किस्म की विजाई सिंचित एवं कम सिंचाई वाले क्षेत्रों में गर्भी तथा खरीफ के मौसम में की जा सकती है। इसका हरा चारा लगभग 55-60 दिनों में कटाई लायक हो जाता है। इसके हरे चारे की पैदावार लगभग 140-150 किंवद्दल प्रति एकड़ है।

उन्होंने किसानों को सलाह दी कि विजाई के समय भूमि में पर्याप्त नमी होनी चाहिए। लोबिया के लिए सिफारिश किए गए राइबियम कल्चर से बीज का उपचार करके विजाई करें। फसल की अच्छी बढ़वार के लिए 10 किलोग्राम नाइट्रोजन व 25 किलोग्राम फास्फोरस प्रति एकड़ विजाई के पहले कतारों में ढूँढ़ करनी चाहिए। दलहनी फसल हीने के कारण इसे नाइट्रोजन उर्वरक की अधिक आवश्यकता नहीं होती। मई में बोई गई फसल को हर 15 दिन बाद सिंचाई की आवश्यकता पड़ती है।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
नभ छोर न्यूज	23.05.2024	--	--

पोस्टर मेकिंग में नैन्सी, नारा लेखन में भूमिका व भाषण में हिमांशी रही प्रथम

नभ-छोर न्यूज ॥ 22 मई
हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के फैसले भवन से मतदाता जागरूकता रैली को विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी आर काम्बोज ने हरी झंडी दिखाकर रखाना किया। विद्यार्थियों ने नुक़्ક़ नाटक के माध्यम से भी लोगों को मतदान करने के लिए जागरूक किया। प्रो. काम्बोज ने कहा कि लोकतंत्र में मतदाता की अहा भूमिका होती है। उन्होंने कहा कि विद्यार्थी जागरूकता रैली के माध्यम से मतदाता ओं को बोट करने के लिए जागरूक करें ताकि मतदान के प्रतिशत को बढ़ाया जा सके। मतदाता अपने बहुमत्य बोट के महत्व को समझें और लोकतंत्र की मजबूती के लिए बूथ पर पूछकर मतदान करें। लोकतंत्र में चुनाव एक घब्बे की तरह होते हैं। इसलिए मतदाता अपने बोट के माध्यम से एक अच्छे जन प्रतिनिधि का चयन करें। विश्वविद्यालय द्वारा मतदाता ओं को

जागरूक करने के लिए विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं ताकि कोई भी मतदाता अपने मताधिकार का प्रयोग करने से विचित न रह जाए। जागरूकता रैली विश्वविद्यालय के फैसले भवन से शुरू होकर ओल्ड कैपस, फार्म कॉलेजी, न्यू कैपस से होते हुए गेट नंबर 4 पर पहुंचती है। विद्यार्थियों ने नुक़्क़ नाटक के माध्यम से मतदाता ओं को मतदान के लिए प्रेरित किया। विद्यार्थियों ने डोर टू डोर कार्यक्रम के माध्यम से भी मतदाता ओं को मतदान के लिए जागरूक किया। विश्वविद्यालय द्वारा इसी कही में पोस्टर मेकिंग, वाद-विवाद, नारा लेखन सहित विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। इन प्रतियोगिताओं में विद्यार्थियों ने बढ़ चढ़कर भाग लिया। इस अवसर पर राज्य सूचना आयुक्त डॉ. जगवीर सिंह, आत्र कल्याण निदेशक डॉ. एम.एल. खिच्चड़, मानव संसाधन प्रबंधन निदेशक डॉ. मंजु महता, परीक्षा नियंत्रक डॉ.



पवन कुमार व वित्त नियंत्रक नवीन जैन उपस्थित रहे। पोस्टर मेकिंग प्रतियोगिता में कृषि महाविद्यालय की छात्रा नैन्सी ने पहला, कॉलेज औफ कम्प्युनिटी साइंस की छात्रा गरिमा ने दूसरा व कृषि महाविद्यालय के छात्र रीतिक यादव ने तीसरा स्थान प्राप्त किया।

नारा लेखन प्रतियोगिता में कॉलेज औफ कम्प्युनिटी साइंस की छात्रा भूमिका यादव प्रथम,

एसीकल्चर विजनेस मैनेजमेंट की छात्रा पूजा यादव द्वितीय तथा कॉलेज औफ कम्प्युनिटी साइंस की मुस्कान सिंह तृतीय स्थान पर रही।

भाषण प्रतियोगिता में मैनेजमेंट की छात्रा हिमांशी प्रथम, कृषि अभियांत्रिकी एवं प्रौद्योगिकी महाविद्यालय की छात्र प्रद्युमन द्वितीय व कृषि महाविद्यालय के छात्र रिस तृतीय स्थान पर रहे।